

किताब है - शान्तिदायी विचार,

अध्याय है - १,

बिसय है - ईश्वर

(1)

हमने ईश्वर का दर्शन किया है। पर इन आँखों से नहीं, ज्ञान से। बाहर नहीं, भीतर। अलग नहीं, अपने में। वह दूसरा नहीं है, हमारी आत्मा है। इसे समझो, इसके गूढ अर्थ पर विचार करो। सच्ची शान्ति और सच्चा आनन्द इसी ज्ञान के भीतर वर्तमान है।

(2)

आत्मा ही ईश्वर है, आत्मा का ही दूसरा नाम ईश्वर है। आत्मा का यह 'ईश्वर' नाम आत्मा की उस अनन्त और अनिर्वचनीय शक्ति का स्मरण दिलाता है; जो मनुष्य के हृदय में उत्साह, विश्वास, श्रद्धा, बल, ज्ञान और आनन्द को भर देती है। अतः सब कार्यों के पहले आत्मा के ईश्वरत्व का स्मरण कर लेना शान्ति, आनन्द, सफलता और कल्याण को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है।

(3)

मत कहो कि ईश्वर मेरी सहायता कर। यदि कहना ही है तो कहो कि हे ईश्वर मुझे ऐसा बलवान बना कि सहायता माँगने की आवश्यकता ही न पड़े। जितना ही हमारा बल बढ़ेगा उतना ही हमारा कठिन से कठिन काम भी आसान होता जायेगा। बलवान के साथ लड़ने से बल बढ़ता है। जिसके सामने कठिनाइयाँ नहीं हैं उसे बल

क्या होगा? कठिनाइयों का युद्ध-निमन्त्रण स्वीकार करो, उन्हें परास्त कर। इससे आत्मा को शान्ति और हृदय को सुख मिलेगा।

(4)

कठिन परिस्थितियों की निन्दा मत करो। खूब विचार करने से मालूम होगा कि उसकी तुम्हारे लिए आवश्यकता थी। यदि वह न होती तो तुम्हारी इतनी उन्नति न हो सकती जो हुई है। बहुत से लोग यदि दरिद्र न होते तो विद्या लाभ भी नहीं करते। आत्मस्वरूप ईश्वर ने व्यर्थ, दूषित, अनावश्यक पदार्थों वा परिस्थितियों को नहीं बनाया है। अतः अपनी कठिन से कठिन परिस्थिति का स्वागत करो। उसके गूढ़ रहस्यों और उसकी आवश्यकता पर विचार करके इस ईश्वर के दिए हुए अवसर से लाभ उठाओ। यह तुम्हारे लिए जहर नहीं अमृत है। इस रहस्य को यदि समझ लोगे तो तुम्हारा हृदय सर्वदा शान्त, सुखी और आनन्द से परिपूर्ण रहेगा।

(5)

कठिन परिस्थितियों और जीवन संग्राम को देखकर कभी मत डरो । संग्राम में ही जीवन और आनंद है। बेकार मनुष्य जीता ही मुर्दा है। सच्ची बातों और सच्चे ज्ञान को जानो। तुम्हारा यह संसार ही तुम्हारे लिए स्वर्गरूप होगा। बड़े- बड़े महात्माओं और कर्मवीरों ने जो कुछ किया है, वह बाहरी ज्ञान से नहीं, भीतरी ज्ञान से। शरीर बल से नहीं आत्मबल से। उसी आत्मबल से जहाँ पर सारी शक्तियों का, सारे बल का, सारे ज्ञान का और सारे सुख और आनन्द का केन्द्र है।

(6)

बड़े- बड़े विज्ञान वेत्ताओं ने बड़े- बड़े फिलासफरों ने जो कुछ आविष्कार किया है, जो कुछ लिखा है, उसे वृत्त वा परिधि में स्थित होकर नहीं - बाहर स्थित होकर नहीं, किन्तु जो कुछ उन्होंने पाया है केन्द्र में स्थित होकर, अन्तर्मुख होकर और भीतर को सिमित कर अर्थात् अपने में आकर।

(7)

ईश्वर से अपनी परिस्थितियों और कामों को सरल करने के लिए मत कहो। इसकी इच्छा मत करो कि तुम्हारे कर्तव्य - कर्म सरल हो जायँ। इससे अच्छा तो यह है कि तुम शक्तिमान होने की इच्छा करो। भावना करो कि हम ऐसे शक्तिमान हो जायँ कि कठिन से कठिन काम भी कर सकें। आसान काम पाने की भावना मत करो। बल की इच्छा करो, सरल काम मिलने की इच्छा करना व्यर्थ है। कठिन से कठिन परिस्थितियों का भी सामना करने के लिए तैयार रहो, इससे तुम्हारा शरीर बलवान होगा, आत्मबल बढ़ेगा और हृदय को शान्ति मिलेगी।

(8)

तुम क्या नहीं कर सकते, पर तुम्हारे भीतर विश्वास नहीं है। अविश्वास के कारण तुम डरते हो। अपने सच्चे स्वरूप को जानकर निर्भय हो जाओ। सारी विपत्ति, सारी कठिनाई और सारा दुःख उसी दिन से छूट जाता है, जिस दिन से यह मनुष्य निर्भय हो जाता है।

जिस समय से यह मनुष्य भय को अपने हृदय से निकाल देता है उस वक्त से असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

--समाप्त--